IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनजातीय क्षेत्रों में ग्रामीण पर्यटन की समस्याएँ

(मध्य प्रदेश के खरगोन जिले के विशेष संदर्भ में)

चंदन लाल,
शोधार्थी
भूगोल विभाग, बीएलपी शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डॉ. आंबेडकर नगर (महू)

प्रारंभ से ही पर्यटन मानव जीवन की महत्वपूर्ण क्रियाओं का महत्वपूर्ण अंग रहा है। यह मनुष्य के आंतरिक भावों से उत्पन्न होने वाला एक ऐसा भाव है जिसके परिणामस्वरुप उसे नया ज्ञान, अनुभव, षिक्षा, संस्कृति आदि बहुत कुछ प्राप्त होता है। पर्यटन सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्रियाकलापों एवं अपने निजी हितों के लिए भी किया जाता है। वर्तमान समय में पर्यटन एक ऐसी गतिविधि बन चुका है जिससे लोगों को सामाजिक एवं आर्थिक लाभ दोनों ही होते है। इसके द्वारा संस्कृति, विचारों, भावनाओं, भाषाओं आदि का आदान–प्रदान होता है। अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों हेतु आवष्यक सुविधाओं का अभाव है। स्थानीय प्रषासन एवं शासन द्वारा इनके विकास हेतु किसी भी प्रकार की कोई व्यवस्था पर्यटकों हेतु उपलब्ध नहीं करायी गयी है। प्रस्तुत शोध ग्रामीण पर्यटन से संबंधित समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

कुंजी शब्द – पर्यटन, जनजाति, विकास, संस्कृति

प्रस्तावना –

हमारे देश में जितनी विविधता है उतनी विश्व के किसी भी अन्य देश में नहीं है। हमारे देश में फैले प्राकृतिक सौंदर्य के बारे में जितना कहा और लिखा जाये कम है। बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ, हीमखण्ड, मनमोहक झीले, विशाल नदियाँ, दूर तक फैला रेगिस्तान, रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, विभिन्न प्रकार के त्यौहार, सम्मोहीत कर देने वाले झरने, जिनमें कहीं गरम तो कहीं ठण्डा पानी है। ये सब मिलकर प्रकृति के उस अनुपम सौंदर्य को दर्शाते है जो पर्यटन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। आगस्टीन ने कहा है कि संसार एक महान पुस्तक है जो घर से बाहर नहीं निकलते है वे केवल इस पुस्तक का एक ही पृष्ठ पढ़ पाते है। वे लोग जो बाहर घूमने नहीं जाते वे कभी भी प्रकृति के सौंदर्य का रसास्वादन नहीं कर सकते। उन्हें सदैव इससे वंचित रहना पड़ता है। यदि इस धरती के भू–भाग पर प्रकृति प्रदत्त सौंदर्य की छटा को निहाराना है तो निश्चित ही पर्यटन को अपनाना होगा।

प्रारंभ से ही पर्यटन मानव जीवन की महत्वपूर्ण क्रियाओं का महत्वपूर्ण अंग रहा है। यह मनुष्य के आंतरिक भावों से उत्पन्न होने वाला एक ऐसा भाव है जिसके परिणामस्वरुप उसे नया ज्ञान, अनुभव, षिक्षा, संस्कृति आदि बहुत कुछ प्राप्त होता है। पर्यटन सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्रियाकलापों एवं अपने निजी हितों के लिए भी किया जाता है। पर्यटन से कई प्रकार के स्थानों एवं उनकी संरचनाओं का विकास किया जा सकता है। पर्यटन के माध्यम से प्रदेशों एवं देशों के मध्य व्यापार सरल एवं सुगम हो सका है इसी कारण से इसे पर्यटन उद्योग कहा जाने लगा है।

पर्यटन का अर्थ एवं परिभाषा –

पर्यटन शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम सन् 1811 में किया गया और पर्यटक शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम सन् 1840 में किया गया। पयर्टन को अंग्रेजी में TOURISM कहा जाता है जिसकी उत्पत्ती अंग्रेजी भाषा के Tour से हुई है। जो कि लेटीन भाषा के Toronos से लिया गया है जिसका अर्थ औजार होता है जो कि एक गोलाकार पहिया जैसा होता है। इसी शब्द के आधार पर यात्रा चक्र का विचार अस्तित्व में आया। Tour शब्द के संबध में ऐसी मान्यता है कि इसे तोराह से लिया गया है जिसका अर्थ होता है अध्ययन एंव खोज करना। तोराह (Torah) शब्द यहूदियों के विधान से संबधित है यह उनके रहन – सहन को व्यक्त करता है। Tour का अर्थ है किसी यात्री द्वारा किसी स्थान पर जाकर खोज करना। इसी प्रकार एक पर्यटक की भी यही जिज्ञासा रहती है वह उस स्थान को प्रत्यक्ष रुप में देखे, जाने, समझे तथा उसका विश्लेषण करें जिसके बारे में अभी तक उसने केवल पढ़ा और सुना ही था।

विदेशी पर्यटकों को ऐसे व्यक्तियों के रुप में परिभाषित किया जो कम से कम चौबीस घंटे के लिए विदेश यात्रा करते हैं। उत्तराधिकारी, संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस परिभाषा में सन् 1945 में संशोधन किया और इसमें अधिकतम 6 माह का प्रवास शामिल कर दिया।

विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार (World Tourism Organization) पर्यटक वे लोग है जो ''यात्रा करके अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थानों में रहने जाते हैं, यह दौरा ज्यादा से ज्यादा एक साल के लिए मनोरंजन, व्यापार, अन्य उद्देश्यों से किया जाता है, यह उस स्थान पर किसी खास क्रिया से संबधित नहीं होता है।''

बदलते समय के साथ यात्रा का स्वरुप भी बदला है। वर्तमान समय में पर्यटन एक नया रुप लिए हुए है जो कि पूर्णतः आधुनिक है। जो तीर्थाटन से प्रारम्भ हुआ था उसने अब आधुनिक पर्यटन का रुप धारण कर लिया है। पारपंरिक पर्यटन और वर्तमान पर्यटन में बहुत अधिक अंतर है। वर्तमान समय में आधुनिक पर्यटन के अन्तर्गत विवाह पर्यटन, साहसिक पर्यटन, क्रूज पर्यटन, भू– पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन आदि आते है। वर्तमान समय में पर्यटन एक ऐसी गतिविधि बन चुका है जिससे लोगों को सामाजिक एवं आर्थिक लाभ दोनों ही होते है। इसके द्वारा संस्कृति, विचारों, भावनाओं, भाषाओं आदि का आदान–प्रदान होता है। पर्यटन से लोगों के ज्ञान में वृद्धि हुई है, जो वे केवल पुस्तकों में पढ़ते थे अब उसे प्रत्यक्ष रुप से देख भी सकते है। वर्तमान समय में पर्यटन लोगों तथा देश के लिए सामाजिक तथा आर्थिक दोनों ही रुप में लाभकारी है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु मध्य प्रदेष के खरगोन जिले का चयन किया गया है तथा यह मुख्य रूप से प्राथमिक समंकों पर आधारित है जो कि साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन के माध्यम से प्राप्त किए गये हैं।

प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष –

- केवल 36 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर ही जलपान की सुविधा उपलब्ध है जबकि 64 प्रतिषत स्थलों पर जलपान की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। अतः ज्यादातर पर्यटन स्थ्ल ऐसे हैं जहॉ पर प्रतिदिन आने वाले पर्यटकों की संख्या बहुत ही न्यून है, जिस कारण से यहॉ खान–पान संबंधी व्यवसाय नहीं चलाया जा सकता है।
- 81.7 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर शासन की ओर से पेयजल की सुविधा उपलब्ध करवायी गयी है जो कि संबंधित ग्राम पंचायत के माध्यम से प्रदान की गयी है। 18.3 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर निजी प्याऊ के माध्यम से पेयजल की सुविध मुहैया करवायी गयी है। इन स्थलों में ज्यादातर धार्मिक स्थल है। अर्थात पर्यटन विभाग की और से किसी भी प्रकार की पेयजल व्यवस्था नहीं की गयी है।
- समस्त पर्यटन स्थलों पर शौचालय की सुविधा उपलब्ध हैं परंतु केवल 54 प्रतिषत स्थलों पर ही सार्वजनिक सुविधाघर उपलब्ध है जबकि शेष 46 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर निजी अथवा किसी ट्रस्ट के द्वारा बनवाये गये शौचालय है। स्थानीय ग्राम पंचायतों के माध्यम से उपलब्ध करवाये गये सुविधाघरों में भी पर्याप्त पानी एवं स्वच्छता का अभाव है। अतः अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर शौचालय संबंधी सुविधओं का उचित इंतजाम नहीं किया गया है।
- अध्ययन क्षेत्र के मात्र 18 प्रतिषत ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर ही कानून व्यवस्था अ़च्छी है जाबकि 64 प्रतिषत स्थलों पर कानून व्यवस्था खराब है तथा 18 प्रतिषत स्थलों पर कानून व्यवस्था अति खराब है। अधिकांष पर्यटन स्थलों पर अपराध नियंत्रण हेतु कोई भी कर्मचारी–अधिकारी मौजूद नहीं रहता है।
- किसी भी पर्यटन स्थल पर पर्यटकों के सामान की सुरक्षा संबंधित कोई भी सुविधा उपलब्ध नहीं है। 82 प्रतिषत स्थल ऐसे है जहॉ समान स्वयं की जिम्मेदारी पर सुरक्षित रखा जा सकता है परंतु कुछ पर्यटन स्थल (18 प्रतिषत) ऐसे हैं जहॉ कीमती सामान के साथ जाना खतरनाक हो सकता है क्योंकि ये स्थल मुख्य आबादी क्षेत्र एवं सड़क से दूर एकांत में स्थित है।
- 18 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर परिवार के साथ जाना भी खतरनाक हो सकता है क्योंकि मुख्य आबादी क्षेत्र एवं मुख्य सड़क मार्ग से दूर होने के कारण इन स्थानों के आस–पास असामाजिक तत्वों का खतरा रहता है। दूसरी बड़ी समस्या यह भी है कि इन स्थनों पर मोबाईल नेटवर्क नही के समान रहता है। 64 प्रतिषत स्थलों पर दिन में जाकर आया जा सकता है अर्थात सूर्यास्त के पश्चात परिवार के साथ इन स्थलों पर रूकना खतरनाक हो सकता है। 9 प्रतिषत स्थल ऐसे हैं जहॉ दिन–रात कभी भी परिवार के साथ आ जा सकते है। इनमें ऐसे स्थल सम्मिलित हैं जो कि आबादी क्षेत्र में ही स्थित है या मुख्य सड़क मार्ग के निकट है।
- अध्ययन क्षेत्र में 9 प्रतिषत पर्यटन स्थल ऐसे एंकांत क्षेत्र में स्थित है जहॉ केवल महिला पर्यटकों का जाना खतरनाक हो सकता है। 73 प्रतिषत स्थलों पर केवल महिला या महिला–पुरूष दो ही लागों का जाना सुरक्षा की दृष्टि से उचित नहीं है। केवल 18 प्रतिषत स्थल ऐसे हैं जहॉ महिलाओं की सुरक्षा संबंधित कोई समस्या नहीं है।

- अध्ययन क्षेत्र के 27.3 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की षिकायत निवारण व्यवस्था अति खराब है अर्थात इन स्थलों पर षिकायत निवारण संबंधी किसी भी प्रकार की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। 54.7 प्रतिषत स्थलों पर भी षिकायत निवारण व्यवस्था का अभाव है परंतु यहां पर उपस्थित स्थानीय लोगों द्वारा कुछ सहायता प्राप्त होते की संभावना रहती है। जबकि 18 प्रतिषत स्थलों पर पर्यटक षिकायत निवारण की व्यवस्था स्थानीय निवासीयों या संबंधित ट्रस्ट के माध्यम से की गयी है।
- अध्ययन क्षेत्र के 27.3 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर अनुषासन व्यवस्था बिल्कुल भी नहीं है। इन स्थलों या इनके आस –पास बैठकर दिन में ही लोग मादक पदार्थों का सेवन करते हुए नजर आते हैं तथा इन्हें रोकने वाला इन स्थलों पर कोई भी नहीं होता है। 54.7 प्रतिषत स्थलों पर भी अनुषासन व्यवस्था का अभाव मिलता है। केवल 9 प्रतिषत स्थलों पर ही अनुषासन व्यवस्था सुचारू रूप में देखने को मिलती है।
- अध्ययन क्षेत्र के लगभग 36 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर सफाई की कोई व्यस्था है ही नहीं। अर्थात इन स्थलों पर स्थानीय प्रषासन या शासन द्वारा कभी भी सफाई नहीं करवाई जाती है। 9 प्रतिषत स्थलों पर वर्ष में किसी विषेष आयोजन पर ही सफाई करवायी जाती है अन्यथा सफाई की कोई व्यवस्था नहीं है। 46 प्रतिषत स्थल जो कि धार्मिक स्थल है में औसत सफाई देखने को मिलती है। केवल 9 प्रतिषत स्थलों पर सफाई की उचित व्यवस्था है जो कि बड़े धार्मिक स्थल हैं। जैसे कि ऊन के जैन स्थल।
- अध्ययन क्षेत्र के लगभग 18 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर पेयजल की कोई व्यस्था नहीं है। यहॉ पर पेयजल हेतु स्त्रोतों का निर्माण करवाया गया है परंतु कई वर्षों से वे स्त्रोत उपयोग की स्थिति में नही है। 9 प्रतिषत स्थलों पर पेयजल की व्यवस्था तो है परंतु पेयजल स्त्रोत की सफाई नहीं होने से स्वच्छ जल का अभाव है। 64 प्रतिषत स्थलों पर पेयजल की उचित व्यवस्था है। 9 प्रतिषत स्थलों पर पेयजल हेतु वाटरकूलर व बिसलरी जल भी उपलब्ध है जो कि ट्रस्ट व निजी दुकानों के माध्यम से उपलब्ध हो रहा है।
- अध्ययन क्षेत्र के लगभग 27.3 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर पर्यावरण प्रदूषण की समस्या है क्योंकि आने वाले पर्यटक अपने साथ अनेक प्रकार की खाद्य सामग्री लेकर आते हैं तथा बची हुई सामग्री व उनके प्लास्टिक के रेपर यहीं खुले में फेंक के चले जाते है जिस कारण से प्रदूषण बढ़ रहा है। 27.3 प्रतिषत स्थल प्राकृतिक रूप से अभी भी बहुत शुद्ध एवं स्वच्छता का अनुभव करवाते हैं। इस प्रकार के अधिकांष स्थल मुख्य आबादी से दूर जंगलों–पहाड़ीयों में स्थित है।
- अध्ययन क्षेत्र के 45.3 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर स्वच्छ आहार संबंधी स्थिति अति खराब है। इन स्थलों में अधिकांष ऐसे हैं जहॉ पर पर्यटकों हेतु आहार की कोई सुविधा ही नहीं है। 27.7 प्रतिषत स्थलों पर आहार की सुविधा उपलब्ध है परंतु स्वच्छता का अभाव है।
- अध्ययन क्षेत्र के लगभग 9 प्रतिषत पर्यटन स्थलों के आस–पास का सामाजिक वातावरण वर्तमान में पर्यटन की दृष्टि से पर्यटकों हेतु ठीक नहीं है। इन स्थानों पर ज्यादातर पर्यटक मादक पदार्थों के सेवन संबंधी पार्टीयों हेतु आते हैं। शेष 91 प्रतिषत ग्रामीण पर्यटन स्थलों का सामाजिक वातावरण पर्यटकों हेतु सामान्य है।
- लगभग 64 प्रतिषत पर्यटकों के अनुसार पर्यटन स्थल पर उपलब्ध स्थानीय लोगों से वार्तालाप संबंधी अनुभव सकारात्मक रहा है। अध्ययन क्षेत्र एक जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र है जहॉ का जनजाति समुदाय अपने अतिथियों के आदर–सत्कार के लिए प्रसिद्ध है। जबकि केवल 36 प्रतिषत पर्यटकों का अनुभव नकारात्मक रहा है जिसका मुख्य कारण पर्यटन स्थलों पर असामाजिक तत्वों, भिखारीयों या लालची व्यापारीयों से वार्तालाप होना है।
- अध्ययन क्षेत्र के 36.7 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर मोबाईल नेटवर्क उपलब्ध ही नहीं है। 45.3 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर कुछ मोबाईल कंपनियों के नेटवर्क है तथा कुछ के नहीं है। 9 प्रतिषत स्थलों पर कुछ मोबाईल कंपनियों के नेटवर्क बहुत अच्छे हैं तो कुछ के कमजोर हैं। जबकि 9 प्रतिषत स्थलों पर सभी मोबाईल कंपनीयों के पर्याप्त नेटवर्क उपलब्ध है। वर्तमान समय में किसी भी पर्यटन स्थल पर अधिकांष मोबाईल कंपनीयों के नेटवर्क होना पर्यटन विकास की दृष्टि से आवष्यक है।
- अध्ययन क्षेत्र के लगभग 36 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर पहुॅचने हेतु सड़क व्यवस्था बहुत ही खराब है जबकि कुछ स्थलों तक का पहूॅच मार्ग दयनीय स्थिति में है। लगभग 55 प्रतिषत स्थलों पर पहुॅचने हेतु सड़क की स्थिति अच्छी है। जो स्थल दूर जंगलों एवं पहाड़ीयों में स्थित है वहॉ के लिए उचित सड़क परिवहन उपलब्ध नहीं है।
- अध्ययन क्षेत्र के लगभग 28 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर पहुॅचन हेतु किसी भी प्रकार की कोई यातायात सुविधा उपलब्ध नहीं है। इन स्थलों पर पहुॅचने हेतु स्वयं का वाहन ही एक मात्र साधन है। लगभग 45 प्रतिषत स्थलों पर पहुॅचन हेतु स्वयं के वाहन के अतिरिक्त उसके कुछ समीप तक जाने वाले ग्रामीण सेवा वाहन उपलब्ध है जो कि

समय–समय पर ही उपलब्ध होते है। 27 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर लगभग सभी प्रकार के सड़क यातायात संबंधी वाहन उपलब्ध हो जाते हैं।

- लगभग 45 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर उपलब्ध सामान्य वस्तुओं के मुल्य वास्तविक मूल्य से कहीं ज्यादा अधिक है जिसका मुख्य कारण पर्यटन स्थल से कई किलोमीटर दूर तक किसी प्रकार की कोई दुकान या बाजार नहीं होना है। लगभग 55 प्रतिषत स्थल जो कि मुख्य सड़क मार्ग एवं आबादी क्षेत्र से दूर नहीं है वहां पर सामान्य वस्तुओं के मूल्य लगभग वास्तविक मूल्य के समान ही है।
- अधिकांष (91 प्रतिषत) पर्यटकों के अनुसार पर्यटन स्थलों पर पहुॅचने का किराया बहुत अधिक है जिसका मुख्य कारण उन स्थलों पर सार्वजनिक वाहनों का आना–जाना नहीं होना है जिस कारण से पर्यटकों को ही अपने खर्च पर वाहन का अधिग्रहण करना होता है जो कि सामान्य किराया से कहीं अधिक होता है।
- लगभग 45 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों के आश्रय संबंधी किसी भी प्रकार की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। लगभग 45 प्रतिषत स्थलों पर आश्रय संबंधी सुविधा तो है परंतु आवष्यक साधन व संसाधन उपलब्ध नहीं है। अर्थात पर्यटकों को आश्रय हेतु स्वयं के साधन लाना होते हैं। केवल 9.3 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर ही पर्यटकों के आश्रय संबंधी पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध है।
- लगभग 73 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर बैंक एटीएम की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है तथा जिन (27 प्रतिषत) स्थलों पर बैंक एटीएम की सुविधा है वे अधिकांष समय बंद रहते हैं या उनमें कैष नहीं होता है।
- 82 प्रतिषत पर्यटन स्थलों पर चिकित्सा संबंधी कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। जबकि जिन (18 प्रतिषत) स्थलों पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध है वहॉ पर अधिकांष समय चिकित्सक नहीं होते हैं या काम चलाऊ चिकित्क उपलब्ध है। पर्यटन की दृष्टि से शासन या प्रषासन द्वारा किसी भी प्रकार की चिकित्सा संबंधी कोई व्यवस्था नहीं की गयी है।

प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध ग्रामीण पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों हेतु आवष्यक सुविधाओं का अभाव है। स्थानीय प्रषासन एवं शासन द्वारा इनके विकास हेतु किसी भी प्रकार की कोई व्यवस्था पर्यटकों हेतु उपलब्ध नहीं करायी गयी है। यही कारण है कि अच्छे पर्यटन स्थल होने के बावजूद भी इन स्थलों पर पर्यटकों का अभाव है। अतः आवष्यक है कि शासन द्वारा इन स्थलों पर पर्यटन की दृष्टि से विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध करवाना चाहिए जिससे की स्थानीय जनजातीय परिवारों को रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सके।

संदर्भ ग्रंथ –

डॉ. के. के. दीक्षित एवं **डॉ. जे. पी. गुप्ता** 2003 पर्यटन के विविध आयाम।

डॉ. सुरेश चन्द्र बंसल 2016 पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबंधन।

Lanc. B. 1997 Whatis Rural Tourism, Journal 06 Sustainable Tourism Vol. 2.

Negi J. M. 1990 Tourism Development and Nature Conservation.

R. K. Pruthi, 2006 Rural Tourism.